ISSN: 2582-7219

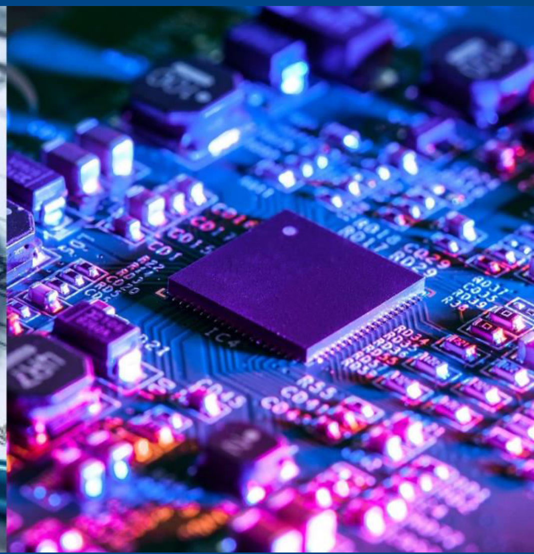

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

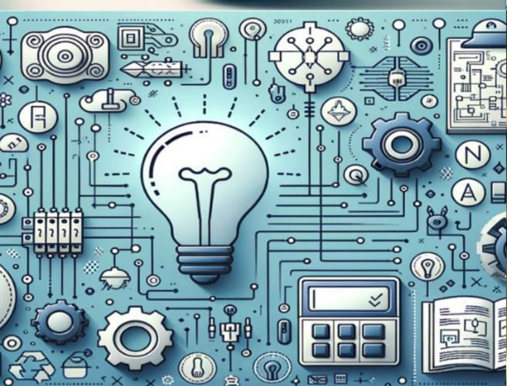

Impact Factor: 8.206

Volume 8, Issue 6, June 2025

www.ijmrset.com ijmrset@gmail.com +91 6381 907 438 +91 63819 07438

© 2025 IJMRSET | Volume 8, Issue 6, June 2025| DOI:10.15680/IJMRSET.2025.0806238

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 8.206| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

मेवाड़ के लघु चित्रों में अलंकरण की परंपरा: सौंदर्य, प्रतीक और शैलीगत विश्लेषण

Harphool Sharma

Assistant Professor (Vidya Sambal Yojana), Fine Arts and Painting, Government Girls College, Pali, Rajasthan

हरफूल शर्मा

सहायक आचार्य (विद्या संबल योजना), फाइन आर्ट्स एंड पेंटिंग, राजकीय कन्या महाविद्यालय, पाली, राजस्थान

सारांश: अलंकरण का उद्देश्य केवल सौंदर्यवर्धन नहीं अपितु सांस्कृतिक, धार्मिक और भावनात्मक अभिव्यक्ति भी रहा है। मेवाड़ के चित्रों में अलंकरण एक दृश्य-काव्य की भाँति काम करता है जो प्रत्येक दृश्य को अर्थ और भाव से परिपूर्ण करता है। प्रतीकों के माध्यम से कलाकारों ने अलंकरण को अर्थगर्भित बनाया जिससे चित्रों में गहराई और परतें जुड़ती हैं। शैलीगत विविधता और समयानुसार विकास ने मेवाड़ की चित्रशैली को सजीव, गतिशील और बहुआयामी बनाया। तकनीकी दृष्टि से भी अलंकरण की प्रस्तुति में मेवाड़ के चित्रकार अत्यधिक परिष्कृत और निपुण सिद्ध हुए।

मेवाड़ के लघु चित्रों में अलंकरण की परंपरा एक समृद्ध और बहुआयामी कला भाषा के रूप में विकसित हुई है। यह परंपरा न केवल चित्रकला की दृश्य भव्यता को बढ़ाती है बल्कि उसमें सामाजिक-सांस्कृतिक प्रतीकों, सौंदर्यबोध और धार्मिक भावनाओं का समावेश करती है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि मेवाड़ चित्रशैली में अलंकरण ने कला को केवल 'दृश्य' से 'भाव' तक और फिर 'संवाद' तक पहुँचाया है। आज के संदर्भ में जब चित्रकला डिजिटल रूप ले चुकी है और पारंपरिक कलाएं विलुप्ति के कगार पर हैं, ऐसे समय में मेवाड़ के इन अलंकृत चित्रों का अध्ययन न केवल इतिहास के दस्तावेज़ की तरह महत्वपूर्ण है बल्कि यह भारतीय सौंदर्यबोध और सांस्कृतिक धरोहर को पुनः समझने का एक सशक्त माध्यम भी है।

प्रस्तावना: भारतीय कला परंपरा का इतिहास अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण है। इस विविधता में राजस्थानी चित्रकला का एक विशिष्ट स्थान है, विशेषतः मेवाड़ की लघु चित्रशैली में, जिसमें लोक परंपराओं, धार्मिक विश्वासों और सांस्कृतिक संवेदनाओं का सम्मिलन अत्यंत कलात्मक रूप से हुआ है। यह चित्रकला न केवल सौंदर्यबोध का अद्भुत उदाहरण है, बल्कि उसमें अलंकरण की जो परंपरा विकसित हुई, वह चित्रों को एक दार्शनिक और सांकेतिक आयाम भी प्रदान करती है।

राजस्थान का मेवाड़ क्षेत्र सदियों से राजनीतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक गतिविधियों का केंद्र रहा है। महाराणा कुम्भा, महाराणा प्रताप और महाराणा जगतसिंह जैसे शासकों ने न केवल सैन्य और राजनीतिक दृष्टि से राज्य की प्रतिष्ठा बढ़ाई, अपितु कला, साहित्य और संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। मेवाड़ शैली की लघु चित्रकला 16वीं शताब्दी से 19वीं शताब्दी तक अपने उत्कर्ष पर रही, जिसमें धार्मिक ग्रंथों, प्रेम कथाओं, जीवन के विविध पक्षों और दरबारी जीवन का चित्रण हुआ।

अलंकरण की परंपरा इस शैली का केंद्रीय तत्त्व रही है। चित्रों में प्रयुक्त वस्त्रों की बारीकियों, आभूषणों की बहुलता, स्थापत्य की भव्यता और प्रकृति के सौंदर्य का महीन चित्रण – ये सभी उस अलंकरण की अभिव्यक्तियाँ हैं जो न केवल सौंदर्य के लिए है, बल्कि प्रतीकों के माध्यम से कथ्य को भी अभिव्यक्त करती है।

प्रमुख शब्द: मेवाड़ चित्रकला, लघु चित्र, अलंकरण परंपरा, भारतीय चित्रकला, सौंदर्यबोध, प्रतीकवाद, शैलीगत विश्लेषण, पारंपरिक तकनीक, दृश्य संस्कृति, धार्मिक प्रतीक, राजसी संस्कृति, सजावटी तत्व, रचना संरचना, चित्रात्मक अभिव्यक्ति

I. साहित्यावलोकन

डॉ. प्रेमशंकर श्रीवास्तव द्वारा लिखित पुस्तक "*भारतीय लघु चित्रकला" का अध्ययन किया गया जिसमे मेवाड़ शैली में प्रयुक्त* अलंकरण की विविधता, वास्तु, परिधान, प्रकृति और प्रतीक आदि का वर्णन किया गया है। डॉ. सुभाषिनी वर्मा द्वारा लिखित पुस्तक "*राजस्थानी चित्रकला का विकास" का अध्ययन किया गया जिसमे* मेवाड़ शैली के ऐतिहासिक विका सएवं सजावटीपरम्पराओ के बारे में विस्तार से बताया गया है। डॉ रतन परिमु द्वारा लिखित पुस्तक "स्टडीज इन इंडियन पेंटिंग"*का अध्ययन किया गया जिसमे* मेवाड़ शैली के शैलीगत तत्व, रेखांकन, प्रतीकात्मकता, शिल्प-शुद्धता आदि का विस्तृत उल्लेख किया गया है। आर.सी.शर्मा द्वारा लिखित पुस्तक "*इंडियन मिनिएचर पेंटिंग" का अध्ययन किया गया जिसमे मेवाड़ शैली की* चित्रकला की तकनीक, रंग, अलंकरण शैलियाँ आदि का वर्णन किया गया है।के .के .शर्मा द्वारा लिखित पुस्तक "*राजस्थानी मिनिएचर पेंटिंग" का अध्ययन किया गया जिसमे* मेवाड़ लघुचित्रों की प्रमुख विशेषताएँ, अलंकरण के प्रकार, वस्त्र एवं अलंकरण आदि का विस्तृत वर्णन किया गया है । श्री मोती चन्द्र द्वारा लिखित पुस्तक "*द आर्ट ऑफ़ राजस्थान"*

का अध्ययन किया गया जिसमे मेवाड़ शैली चित्रों में पृष्ठभूमि सज्जा, पुष्प अलंकरण, महलों की सजावट आदि के बारे में विस्तार से बताया गया है ।

© 2025 IJMRSET | Volume 8, Issue 6, June 2025| DOI:10.15680/IJMRSET.2025.0806238

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 8.206| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

II. शोध का उद्देश्य और महत्व

इस शोध का उद्देश्य मेवाड़ चित्रों में प्रयुक्त अलंकरण तत्वों का विश्लेषण करना है, जिनमें वस्त्र-भूषण, प्रकृति चित्रण, स्थापत्य सज्जा, सीमांकन शैली, प्रतीकात्मक रूपक आदि सम्मिलित हैं। साथ ही यह अध्ययन अलंकरण के सौंदर्यशास्त्रीय, सांस्कृतिक तथा प्रतीकात्मक पक्षों को भी उद्घाटित करता है।यह शोध चित्रों में सौंदर्यबोध की विविध अभिव्यक्तियों को समझने में सहायक होगा जिससे मेवाड़ चित्रकला में प्रयुक्त माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को जानने का अवसर प्राप्त होगा।

यद्यपि इन अध्ययनों में अलंकरण का उल्लेख हुआ है, फिर भी किसी स्वतंत्र विषय के रूप में इस पर समग्र दृष्टिकोण से विचार अपेक्षाकृत कम हुआ है। यह शोध उस रिक्तता की पूर्ति का प्रयास हैजहाँ अलंकरण को एक कलात्मक एवं सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में देखा गया है।

इस प्रस्तावना से स्पष्ट है कि यह शोध न केवल एक दृश्य कला का अध्ययन हैबल्कि उसके माध्यम से एक समृद्ध सांस्कृतिक संवाद की खोज भी है, जो रंग, रेखा और रूप के माध्यम से अभिव्यक्त होता है।मेवाड़ की लघु चित्रकला भारतीय चित्र परंपरा का एक विशिष्ट और समृद्ध अध्याय है। इसमें जो अलंकरण शैली विकसित हुई, वह केवल सौंदर्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं हैबल्कि उसमें समकालीन समाज, संस्कृति, धर्म और जीवन-दर्शन के गहन संकेत भी समाहित हैं। इस शोध का उद्देश्य मेवाड़ चित्रकला में अलंकरण के तत्वों की खोज करना हैजो अब तक प्रायः उपेक्षित रहे हैं।यह शोध मेवाड़ चित्रकला की व्यापक सांस्कृतिक भूमिका को समझने में सहायक सिद्ध होगा।

शोध की सीमा और पद्धति

यह शोध मुख्यतः 17वीं से 19वीं शताब्दी तक के मेवाड़ लघु चित्रों पर केंद्रित है। इसमें चित्रकला के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सौंदर्यशास्त्रीय और प्रतीकात्मक पक्षों को अध्ययन की दृष्टि से ग्रहण किया गया है। सामग्री संग्रह के लिए प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। तुलनात्मक विश्लेषण और दृश्य विवेचना प्रमुख पद्धतियाँ रही हैं।

मेवाड़ राज्य और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

राजस्थान का मेवाड़ क्षेत्रजो आज के उदयपुर जिले के अंतर्गत आता है, ऐतिहासिक रूप से एक स्वतंत्र और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध राज्य रहा है। इसकी भौगोलिक स्थितिअरावली की पर्वतमालाओं और झीलों के बीच, इस क्षेत्र को प्राकृतिक सौंदर्य और सांस्कृतिक विविधता से परिपूर्ण बनाती है।
मेवाड़ राजवंशविशेषतः गुहिल वंशजिन्होंने 8वीं शताब्दी से इस क्षेत्र पर शासन किया, ने कला और संस्कृति को संरक्षण और प्रोत्साहन देने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महाराणा कुंभा (1433–1468) से लेकर महाराणा फतह सिंह (1884–1930) तकमेवाड़ में चित्रकला को निरंतर राजाश्रय प्राप्त रहा। धार्मिक भक्तिविशेषकर वैष्णव भक्ति की प्रधानताइस क्षेत्र की कला अभिव्यक्ति में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

चित्रकला की उत्पत्ति और विकास

मेवाड़ लघु चित्रकला की प्रारंभिक जड़ें अपभ्रंश और जैनेन्द्र चित्र परंपरा से जुड़ी हैं। प्रारंभिक चित्रों में धार्मिक विषयवस्तु, विशेषकर जैन तीर्थंकरों और वैष्णव धर्म की घटनाओं का चित्रण प्रमुख रहा। 16वीं शताब्दी तक यह परंपरा सीमित थीपरंतु 17वीं शताब्दी में यह एक पूर्ण विकसित शैली के रूप में सामने आई।

मेवाड़ चित्रकला के विकास को तीन प्रमुख चरणों में विभाजित किया जा सकता है:

1. प्रारंभिक चरण (1550–1600): इस काल में चित्रों में अधिकतर धार्मिक विषयवस्तु थी, रंग सीमित और रेखांकन सरल था। कागज़ या ताड़पत्र पर चित्र बनाए जाते थे।
2. उत्कर्ष काल (1600–1750): यह मेवाड़ चित्रकला का स्वर्ण युग माना जाता है। इस काल में रागमाला, भागवत पुराण, गीत गोविंद, रामायण जैसे ग्रंथों पर आधारित चित्रों की रचना हुई। रंगों में विविधता आईऔर अलंकरण में अद्भुत परिशुद्धता और सौंदर्य देखा गया।
3. पुनरावृत्तिकाल (1750–1900): इस समय राजाश्रय में गिरावट आईपरंतु लोककला और धार्मिक केंद्रों में चित्रकला की परंपरा जारी रही। इस काल में चित्रकला में तकनीकी विविधता और विदेशी प्रभाव परिलक्षित होते हैं।

III. प्रमुख चित्रकार और संरक्षणकर्ता

मेवाड़ की चित्रकला परंपरा में अनेक कुशल चित्रकारों ने योगदान दिया, जिनमें से अधिकांश दरबारी चित्रकार थे। यद्यपि अधिकतर चित्रकारों के नाम ज्ञात नहीं हैं, परंतु कुछ उल्लेखनीय नाम हैं:

- **साहिब दीन**: 18वीं शताब्दी के प्रसिद्ध चित्रकार, जिन्होंने रागमाला और नायिका भेद शृंखला पर सुंदर चित्र बनाए।
- **मानक**: महाराणा सज्जन सिंह के दरबार में कार्यरत चित्रकार, जिनके चित्रों में स्थापत्य और प्रकृति का अलंकरण विशेष उल्लेखनीय है।
- **नाना**: प्राकृतिक रंगों के प्रयोग में दक्ष, जिनके चित्रों में सूक्ष्म रेखांकन और अलंकरण के अद्वितीय उदाहरण मिलते हैं।

संरक्षण की दृष्टि से मेवाड़ दरबार के अलावा प्रमुख धार्मिक केंद्रजैसे नाथद्वारा मंदिर, चित्रकला के केंद्र बने। वहाँ के पट चित्रों और गोवर्धन पूजा चित्रों में भी अलंकरण की गहरी परंपरा मिलती है।

© 2025 IJMRSET | Volume 8, Issue 6, June 2025| DOI:10.15680/IJMRSET.2025.0806238

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 8.206| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

मेवाड़ चित्रों में अलंकरण के विविध प्रकार

मेवाड़ शैली की लघु चित्रकला में अलंकरण केवल सौंदर्यवर्धन का साधन नहीं हैबल्कि यह चित्र के भाव, संस्कृति और प्रतीकात्मकता को व्यक्त करने का एक प्रमुख माध्यम भी है। यहाँ हम मेवाड़ के चित्रों में प्रयुक्त विविध प्रकार के अलंकरणों का विश्लेषण करेंगेजिनमें प्रमुखतः वस्त्र, आभूषण, सीमांकन, प्राकृतिक और स्थापत्य अलंकरण सम्मिलित हैं।

वस्त्र और आभूषण अलंकरण

मेवाड़ चित्रों में स्त्री एवं पुरुष पात्रों के वस्त्र अत्यंत सुसज्जित और रंग-बिरंगे होते हैं। अंगरखा, चोली, घाघरा, ओढ़नी, पगड़ी आदि वस्त्र न केवल समय विशेष की पोशाक दर्शाते हैंबल्कि इनमें कढ़ाई, पट्टियाँ, गोल बूटियाँ, जरी का कार्य आदि चित्रों के माध्यम से अद्भुत रूप में दर्शाया गया है।
स्त्रियाँ बहुधा भारी आभूषणों से सजी होती हैं–कर्णफूल, नथ, हार, बाजूबंद, झूमर, पायल आदि का अत्यंत बारीक चित्रण किया गया है। इन आभूषणों में स्वर्ण, रत्न, मोती आदि की चमक को रंगों और रेखाओं की बारीकी से दर्शाया गया है। पुरुष पात्रों में भी राजसी अलंकरण जैसे मुकुट, कमरबंध, कंठहार प्रमुख हैं।

सीमांकन अलंकरण (हाशिया सज्जा)

चित्रों के चारों ओर बनाए गए हाशिएजिन्हें सीमांकन या 'बॉर्डर डेकोरेशन' कहा जाता है, मेवाड़ शैली की एक प्रमुख विशेषता है। इन हाशियों में पुष्प-बेल, ज्यामितीय आकृतियाँ, लताओं के क्रम, पक्षी-पुष्पों की माला आदि का प्रयोग चित्र के केंद्र भाग को एक गरिमा प्रदान करता है। कभी-कभी इन हाशियों में स्वर्ण अथवा चाँदी की स्याही का प्रयोग भी होता हैजिससे चित्र को एक अलंकारिक आभा मिलती है।

प्राकृतिक दृश्य और पुष्पीय अलंकरण

मेवाड़ शैली में प्रकृति का चित्रण अत्यंत सज्जित एवं सौंदर्ययुक्त होता है। आकाश की लाली, पेड़ों की आकृति, पुष्पों की विविधता, पशु-पक्षियों की गतिविधियाँ – सभी में अलंकरण का विशिष्ट उपयोग होता है। कमल, अशोक, केतकी, गुलाब आदि पुष्पों को न केवल वातावरण निर्माण हेतुबल्कि भावव्यंजना के प्रतीक रूप में भी दर्शाया गया है।

प्राकृतिक दृश्यजैसे पर्वत, नदी, झील, वन आदि को रंगों की गहराई, रेखाओं की गति और छाया-प्रकाश के माध्यम से अत्यंत अलंकृत रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह केवल सौंदर्य का नहींबल्कि समग्र भावभूमि का निर्माण करता है।

स्थापत्य अलंकरण

मेवाड़ चित्रों में भवन, महल, मंदिर, द्वार, छतरियाँ आदि का चित्रण न केवल वास्तुकला का संकेत देता हैबल्कि इन स्थापत्य तत्वों में अलंकरण की अत्यंत सूक्ष्म और सुरुचिपूर्ण शैली परिलक्षित होती है। स्तंभों पर बेलबूटे, छज्जों पर झरोखे, दीवारों पर चित्रकारी, फर्श पर रंगीन टाइलों का रूपांकनये सब चित्र को विस्तृत एवं भव्यता प्रदान करते हैं।

विशेषकर दरबारी चित्रों में स्थापत्य का अलंकरण सामाजिक हैसियत, सत्ता की गरिमा और भव्य जीवन शैली का प्रतीक बन जाता है।
इन विविध प्रकारों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि मेवाड़ लघुचित्रों में अलंकरण एक बहुआयामी प्रक्रिया हैजो चित्र को केवल सुंदर ही नहीं बनातीबल्कि उसमें जीवंतता, भाव, संकेत और संस्कृति की परतें जोड़ती है।

IV. विषयवस्तु के अनुसार अलंकरण का स्वरूप

मेवाड़ लघु चित्रकला में अलंकरण की प्रकृति विषयवस्तु के अनुसार भिन्न-भिन्न रूप में सामने आती है। धार्मिक चित्रों में जहाँ आध्यात्मिकता और प्रतीकवाद प्रमुख होता हैवहीं रागमाला या नायिका भेद चित्रों में अलंकरण का सौंदर्यबोध और श्रृंगारिक तत्व अधिक प्रबल होते हैं। इसी प्रकार दरबारी जीवन को दर्शाने वाले चित्रों में सामाजिक पद और वैभव की झलक मिलती है।

धार्मिक चित्रों में अलंकरण

धार्मिक चित्रोंविशेषकर कृष्ण लीला, रामायण, भागवत पुराण आदि पर आधारित चित्रों में अलंकरण का उद्देश्य न केवल चित्र को सुंदर बनाना हैबल्कि उसमें धार्मिक और आध्यात्मिक भावनाओं का संचार करना भी है।

भगवान कृष्णके वस्त्र पीताम्बर, मुकुट, मुरली, मोरपंख, गले का वैजयंती हार आदि सभी अत्यंत अलंकृत दिखाए गए हैं।गोपियोंकी वेशभूषा में विशेष प्रकार के गहनों और वस्त्रों से कृष्ण-भक्ति का सौंदर्यबोध झलकता है।मंदिरों, घाटों, वृंदावन की प्राकृतिक छवियाँसभी को अलंकृत रूप में प्रस्तुत किया गया है।धार्मिक चित्रों में अलंकरण एक प्रकार से भक्ति और दर्शनीयता का माध्यम बनता है।

रागमाला चित्रों में सौंदर्यबोध

रागमाला श्रृंखला में प्रत्येक चित्र का किसी राग या रागिनी से संबद्ध होता है और उसमें भाव, ऋतु, समय तथा सौंदर्य का विशिष्ट समावेश होता है। इस प्रकार के चित्रों में अलंकरण की भूमिका अत्यंत संवेदनशील और प्रतीकात्मक होती है।वस्त्रों में रंगों का चयनउस राग के स्वभाव के अनुसार किया गया हैजैसे राग मेघ में नीले और श्याम रंग, राग दीपक में पीले और नारंगी।पृष्ठभूमि में वृष्टि, दीप, वन या जल की छवियाँ, उस राग विशेष के मूड को व्यक्त करने हेतु सजाई जाती हैं।नायिका-नायक के आभूषण, उनके भावों को उभारने हेतु अत्यंत सूक्ष्मता से चित्रित किए जाते हैं।रागमाला चित्रों में अलंकरण केवल दृश्य सज्जा नहीं बल्कि संगीतात्मक भावाभिव्यक्ति का माध्यम बन जाता है।

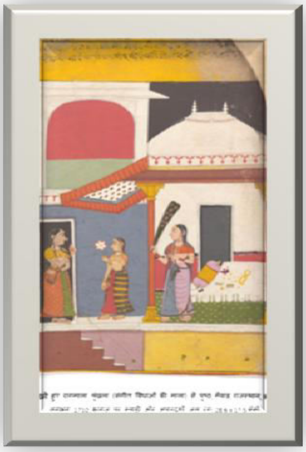

नायिका भेद चित्रों में श्रृंगारिक अलंकरण

नायिका भेद चित्रों में श्रृंगार रस की प्रधानता रहती है और चित्रों में स्त्री सौंदर्य, भाव-भंगिमा और सज्जा को अत्यंत कुशलता से उकेरा जाता है। अलंकरण यहाँ भावनाओं की स्पष्टता और नायिकाओं की श्रेणियों के अनुसार भिन्न रूप में सामने आता है।स्वाधीनपतिका नायिकाके गहने और पोशाक सजीव और आत्मविश्वास से भरपूर होते हैं।विरहिणी नायिकाके वस्त्र फीके रंगों में होते हैं, गहनों का उपयोग कम होता है या अस्त-व्यस्त रूप में दिखाया जाता है।अभिसारिका नायिकाकी सज्जा रात्रिकालीन होती है, चंद्रमा, दीप, झीनी ओढ़नी, गहनों की झिलमिलाहट – यह सब एक विशेष अलंकरण का वातावरण बनाते हैं।यहाँ अलंकरण न केवल रूप को उभारता है, बल्कि मनोदशा और नायिका के अंतर्मन को भी चित्रित करता है।

दरबारी जीवन और सामाजिक संकेतों का चित्रण

मेवाड़ चित्रों में राजाओं, दरबारियों, सैन्य अधिकारियों और अन्य समाजिक वर्गों का भी विस्तृत चित्रण होता है। इन चित्रों में अलंकरण सामाजिक स्थिति, सत्ता, शानो-शौकत और सांस्कृतिक परिवेश का द्योतक होता है।राजा और रानी की पोशाक और गहनेउनकी उच्च पदस्थता और वैभव को दर्शाते हैं।दरबार के फर्श, पर्दे, झरोखे, दीवारों पर सजावट, चित्र में स्थापत्य और शृंगारिक अलंकरण का उदाहरण बनते हैं।सैनिकों के कवच, अस्त्र-शस्त्र, ध्वज आदिभी एक प्रकार के शक्ति अलंकरण हैं।यह सभी अलंकरण चित्रों को न केवल ऐतिहासिक संदर्भ देते हैंबल्कि मेवाड़ की सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना का दस्तावेज भी प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार हम पाते हैं कि मेवाड़ चित्रों में अलंकरण की प्रकृति विषयवस्तु के अनुसार बदलती है। धार्मिक चित्रों में यह भक्ति और भावना का प्रतीक होता है, रागमाला में सौंदर्य और संगीत का, नायिका भेद में श्रृंगार का और दरबारी चित्रों में सामाजिक पदानुक्रम और भव्यता का संकेत देता है। यह विविधता ही मेवाड़ शैली को जीवंत और बहुरंगी बनाती है।

रंग, रेखा और तकनीक का योगदान

मेवाड़ की लघु चित्रकला में रंगों, रेखाओं और तकनीकी दक्षता का योगदान केवल चित्र को सुंदर बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह चित्रकला की आत्मा को अभिव्यक्त करने का एक माध्यम भी है। यहाँ हम इन तीनों घटकों – रंग, रेखा और तकनीक के माध्यम से अलंकरण परंपरा के विविध पक्षों का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे।

प्राकृतिक रंगों का उपयोग

मेवाड़ चित्रकारों ने पारंपरिक रूप से प्राकृतिक रंगों का प्रयोग कियाजो खनिज, पौधों, फूलों, और विभिन्न जैविक स्रोतों से प्राप्त किए जाते थे। लाल रंग के लिए सिंदूर, पीले के लिए हरड़ या हल्दी, नीले के लिए नील या लाजवर्त, हरे के लिए अपराजिता जैसे पौधों का रस या फेरिक ऑक्साइड का प्रयोग किया जाता था।

इन रंगों का चयन केवल सौंदर्य के लिए नहींबल्कि प्रतीकात्मक उद्देश्यों से भी किया जाता था ।

- लाल रंग – प्रेम, शक्ति और भक्ति का प्रतीक
- नीला – शांति, आध्यात्मिकता और भगवान कृष्ण की पहचान
- स्वर्ण एवं रजत रंग – दिव्यता, वैभव और शक्ति का प्रतीक

© 2025 IJMRSET | Volume 8, Issue 6, June 2025| DOI:10.15680/IJMRSET.2025.0806238

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 8.206| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

रंगों की गुणवत्ता को टिकाऊ बनाए रखने हेतु गोंद या गोंद्रस, अरबी गोंद, नींबू रस, और पशुओं की त्वचा से प्राप्त जेलाटिन का प्रयोग होता था। यह प्राकृतिक रंग युगों तक अपनी चमक और प्रभाव को बनाए रखते हैं।

रेखांकन शैली और अलंकरण

रेखांकन मेवाड़ चित्रकला की सबसे सशक्त पहचान है। चित्रकार बारीक और सजीव रेखाओं द्वारा वस्त्रों की सिलवटें, आभूषणों की बारीकियाँ, केश सज्जा, पुष्प-लताएँ तथा स्थापत्य अलंकरण को प्रस्तुत करते थे।

रेखाओं की प्रमुख विशेषताएँ:

- बारीक, स्पष्ट और नियंत्रित रेखाएँ
- वस्त्रों में बहती हुई सिलवटों की प्रवाहमयी शैली
- चेहरे की भंगिमाओं को रेखाओं द्वारा जीवंत बनाना
- हाशिए और पृष्ठभूमि की सज्जा में ज्यामितीय एवं पुष्पीय रेखाएँ

रेखांकन में कलम या बारीक ब्रश का उपयोग किया जाता था। एक ही चित्र में कई मोटाई की रेखाएँ देखने को मिलती हैं । मोटी रेखा से आकृति का बाह्य रेखांकनऔर सूक्ष्म रेखाओं से आंतरिक सज्जा। यह अलंकरण की सुंदरता और गहराई को अत्यंत सूक्ष्मता से प्रकट करता है।

सुनहरे-रजत रंगों और झिलमिल प्रभाव का प्रयोग

मेवाड़ चित्रों में कभी-कभी स्वर्ण और चाँदी की स्याही अथवा पाउडर का उपयोग किया जाता थाविशेषतः धार्मिक, राजकीय या उत्सव चित्रों में। ये अलंकरण चित्र को एक दिव्यता और भव्यता प्रदान करते हैं।

- स्वर्ण रंग: मुकुट, आभूषण, सिंहासन, सूर्य किरण, दीप आदि में प्रयुक्त होता था।
- रजत रंग: चंद्रमा, जल, चमकते वस्त्रों, शंख, या आभूषणों में।

इस झिलमिल प्रभाव को बनाने के लिए सोने/चाँदी की पतली परत को गोंद के साथ मिलाकर लगाया जाता थाजिसे 'ताम्बा' या 'वर्क' कहते हैं। यह न केवल चित्र को चमक प्रदान करता है, बल्कि भावनात्मक प्रभाव भी गहरा करता है।

परिप्रेक्ष्य और दृश्य संरचना की तकनीक

हालाँकि मेवाड़ शैली में परंपरागत भारतीय चित्रकला की तरह समतल दृष्टिकोण (Flat Perspective) होता हैकिंतु कलाकारों ने दृश्य संरचना में परत दर परत दृश्य रचना की तकनीक विकसित की थी।

- अग्रभूमि, मध्यभूमि और पृष्ठभूमि में वस्तुओं का समायोजन
- रंगों की तीव्रता और हल्केपन से दूरी का आभास
- दृश्य समांतरता के बजाय प्रतीकात्मक संरचना

इस तकनीक से चित्रों में घटनाओं का क्रम, भावों की गहराई और वातावरण का निर्माण अत्यंत प्रभावशाली रूप में होता है।

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 8.206| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

V. कागज़, ब्रश और अन्य औजार

कला की तकनीकी प्रक्रिया में प्रयुक्त उपकरण भी अलंकरण की गुणवत्ता को प्रभावित करते थे। मेवाड़ी चित्रकार मुख्यतः हस्तनिर्मित कागज़ पर चित्रण करते थे। यह कागज़ कपड़े, चावल, नीम की छाल और विभिन्न जैविक पदार्थों से तैयार किया जाता था।

ब्रश बनाने के लिए गिलहरी, नेवले या ऊँट के बालों का प्रयोग होता था। ये ब्रश बहुत पतले होते थेजिससे अत्यंत सूक्ष्म रेखाएं बनाई जा सकती थीं। अन्य औजारों में:

- शंख की नोक से बिंदु बनाना
- बारीक काँटे से पृष्ठभूमि पर नक़्क़ाशी
- चमड़े की थपकी से रंग को रेशेदार बनाना

इन सब तकनीकों ने मेवाड़ चित्रकला के अलंकरण को एक विशिष्ट पहचान और गुणवत्ता प्रदान की।

प्रतीकवाद और भावव्यंजना

मेवाड़ की लघु चित्रकला में अलंकरण की परंपरा केवल दृश्य सौंदर्य तक सीमित नहीं है, बल्कि वह गहरे प्रतीकात्मक अर्थों और भावों की व्यंजना का माध्यम भी बनती है। यह अध्याय अलंकरण के प्रतीकात्मक पक्षों और भावनात्मक संप्रेषण की सूक्ष्मताओं का विश्लेषण करता है।

प्रतीक रूप में अलंकरण

प्रतीक वह माध्यम है जिसके द्वारा दृश्य कला में अमूर्त विचारों और भावनाओं को मूर्त रूप प्रदान किया जाता है। मेवाड़ चित्रकला में प्रयुक्त अलंकरण चाहे वह पुष्प हो, रंग हो, वस्त्र या आभूषण, किसीनकिसी प्रतीकात्मक अर्थ से युक्त होता है।

- **कमल पुष्प:** शुद्धता, दिव्यता और भक्ति का प्रतीक। अनेक धार्मिक चित्रों में भगवान के आसन के रूप में कमल दिखाया गया है।
- **मोरपंख:** विशेष रूप से श्रीकृष्ण के साथ जुड़ा प्रतीक, जो सौंदर्य, प्रेम और चपलता को दर्शाता है।
- **मुकुट और आभूषण:** न केवल भौतिक वैभव, बल्कि दिव्यता और शक्ति का भी द्योतक।
- **रंगों का प्रयोग:** जैसे पीला रंग भक्ति और संतोष का, नीला शांति और गहराई का, लाल प्रेम और शक्ति का प्रतीक माना गया है।

धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतीकों का विश्लेषण

धार्मिक विषयों वाले चित्रों में अलंकरण तत्व धार्मिक प्रतीकों के रूप में कार्य करते हैं।

- कृष्ण लीला में गायें और बांसुरी: pastoral devotion (गोप संस्कृति) और दिव्यता के प्रतीक हैं।
- गोपियों के वस्त्रों की सज्जा: रासलीला में संपूर्ण भक्ति और आत्मसमर्पण का प्रतिनिधित्व करती है।
- अलंकृत वृक्ष और फूल: प्रकृति के माध्यम से ईश्वरीय उपस्थिति और सौंदर्य का बोध कराते हैं। सांस्कृतिक स्तर पर, मेवाड़ चित्रों में अलंकरण जनजीवन, उत्सवों और सामाजिक मान्यताओं के प्रतीक रूप में चित्रित होता है।
- त्योहारों में दीप, ध्वज, फूलों की माला: आनंद, समर्पण और लोक-संस्कृति के संकेतक होते हैं।
- स्त्रियों की मेंहदी, चूड़ियाँ, पायल: स्त्रीत्व, सौंदर्य और परंपरा का प्रतीक।

चित्रों में अलंकरण द्वारा भाव संप्रेषण

भावव्यंजना कला का वह पक्ष है जो दृश्य संकेतों के माध्यम से दर्शक में एक विशेष भाव उत्पन्न करता है। मेवाड़ चित्रों में अलंकरण, भावाभिव्यक्ति का अत्यंत प्रभावशाली उपकरण है।

- विरह दर्शाने वाले चित्रों में फीके रंग, ढीले वस्त्र, अस्त-व्यस्त गहने: नायिका के मन की व्यथा का चित्रात्मक रूपांतरण।
- उत्सव दृश्य में चमकीले रंग, पुष्प-वर्षा, दीपों की श्रृंखला: उल्लास और हर्षोल्लास की व्यंजना।
- राजसी दृश्यों में स्वर्ण अलंकरण, विस्तृत स्थापत्य, समृद्ध पोशाक: शक्ति, वैभव और प्रभुत्व का भाव दर्शाते हैं।

चित्रों में अलंकरण का भावात्मक पक्ष दर्शकों को केवल दृश्य नहीं, अनुभव प्रदान करता है। यह भावनाओं की अभिव्यक्ति को गहराई और परिपक्वता देता है।

यहाँ यह स्पष्ट होता है कि मेवाड़ चित्रों में अलंकरण एक गूढ़ भाषिक माध्यम है जो प्रतीक और भाव दोनों को समाहित करता है। यह चित्रकला को केवल दृष्टिगोचर नहीं बल्कि अनुभूतिपरक बनाता है। कलाकारों ने सूक्ष्म संकेतों, रूपकों और रंग-रेखाओं के माध्यम से जो भाव और प्रतीक चित्रों में बुने हैं, वे आज भी दर्शकों को संवेदनात्मक स्तर पर जोड़ते हैं।

मेवाड़ चित्रशैली में अलंकरण की सांस्कृतिक जड़ें

मेवाड़ की चित्रशैली की उत्पत्ति स्थानीय परंपराओं, भक्ति आंदोलन, राजसी संरक्षण और जनजीवन की अभिव्यक्ति से जुड़ी रही है। इसमें अलंकरण की परंपरा का गहरा संबंध राजपूत सौंदर्यबोध, धार्मिक मान्यताओं और शिल्पशास्त्र से रहा है। चित्रों में प्रयुक्त आभूषण, वस्त्र, स्थापत्य, पृष्ठभूमि के वृक्ष-पुष्प, पशु-पक्षी, आकाशीय प्रतीक और रंग संयोजन सभी तत्व एक व्यापक संस्कृति का प्रतिबिंब हैंजिनका उद्देश्य केवल दृश्य प्रभाव उत्पन्न करना नहींअपितु एक व्यापक भावप्रणाली को दर्शाना है।

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 8.206| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

सौंदर्यशास्त्रीय दृष्टिकोण से अलंकरण

मेवाड़ शैली में सौंदर्यशास्त्र न केवल दृश्य सामंजस्य के लिए प्रयुक्त हुआ हैबल्कि यह चित्रकला के माध्यम से एक भावात्मक संवाद भी स्थापित करता है। नायिका की वेशभूषा,उसके केशविन्यास, नेत्रों की आकृति, अंगों की सुडौलता, आभूषणों की बारीकियाँ सभी सौंदर्यशास्त्र के मानकों पर आधारित हैं। चित्रकारों ने समग्र रचना में संतुलन, लय, सामंजस्य और सजीवता लाने के लिए अलंकरण का सूक्ष्म प्रयोग किया।

क्लासिकी सौंदर्यबोध के आधार पर 'रूप-लावण्य' को चित्रों में इस रूप में दर्शाया गया कि प्रत्येक दृश्य एक काव्यात्मक रचना का अनुभव कराता है। प्रकृति का चित्रण भी अलंकरण का हिस्सा बनता है । कमल-सरोवर, आम्रवृक्ष, बादलों की लहरें, मोर, हंस, और लता-पत्तियों से सज्जित पृष्ठभूमियाँ न केवल दृश्य रम्यता प्रदान करती हैं, बल्कि मानसिक शांति व अध्यात्मिक सौंदर्य का भी आभास देती हैं।

प्रतीकवाद और अर्थ-गर्भित अलंकरण

मेवाड़ के चित्रों में प्रतीकात्मकता अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अलंकरण के माध्यम से चित्रकारों ने उन अर्थों को उजागर कियाजिन्हें शब्दों में प्रकट करना कठिन होता। उदाहरणतः:

- **मोर**: श्रृंगार, प्रेम और वर्षा का प्रतीक।
- **कमल**:पवित्रता, दिव्यता और देवीत्व का द्योतक।
- **चन्द्रमा और तारागण**:शीतलता, सौम्यता और रात्रि की रागात्मकता का संकेत।
- **आभूषणों की अधिकता**: सामाजिक पद, वैभव, सौंदर्य और भावावेश को दर्शाती है।

इन प्रतीकों का संयोजन केवल सौंदर्य बढ़ाने के लिए नहींबल्कि एक व्यापक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संदेश देने के लिए किया गया। यथार्थ और कल्पना के इस समन्वय ने मेवाड़ चित्रशैली को विशिष्ट पहचान प्रदान की।

शैलीगत विविधता और विकास

मेवाड़ की चित्रकला में अलंकरण की शैली समय के साथ परिष्कृत होती गई। प्रारंभिक काल के चित्रों में जहाँ ठोस रंगों और सरल अलंकरण का प्रयोग होता हैवहीं मध्य और उत्तरकालीन चित्रों में यह अधिक जटिल और परिनिष्ठित हो जाता है। इस विकास क्रम में निम्नलिखित प्रमुख चरण उभर कर आते हैं:

1. प्रारंभिक चरण (16वीं शताब्दी): इसमें धार्मिक ग्रंथों (जैसे भगवद्गीता, रामायण) पर आधारित चित्रों में सीमित अलंकरण और अधिक भावप्रधान रचना देखने को मिलती है।
2. मध्य काल (17वीं शताब्दी): इसमें रासलीला, बारहमासा, रागमाला आदि विषयों में नारी सौंदर्य, प्रकृति, भवनों, वस्त्रों में समृद्ध अलंकरण दृष्टिगोचर होता है।
3. उत्तरकाल (18वीं शताब्दी के पश्चात): शाही जीवन, प्रेम-प्रसंग, दरबारी दृश्य, शिकारी प्रसंगों में अत्यधिक सज्जा, स्थापत्य, वस्त्र, फर्श, पर्दों और थालियों तक में बारीक अलंकरणों का प्रयोग होता है।

अलंकरण का यह क्रमिक विकास न केवल तकनीकी प्रगति को दर्शाता है बल्कि यह कलाकारों की सौंदर्य दृष्टि और शिल्प कौशल में हुई प्रगति को भी उजागर करता है।

VI. तकनीकी दृष्टि से अलंकरण का प्रयोग

चित्रों में अलंकरण की प्रस्तुति हेतु चित्रकारों ने रंगों, रेखाओं, सोने-चांदी की झिलमिलाहट, महीन ब्रशवर्क, पारंपरिक कागज, और जल रंगों का प्रभावशाली प्रयोग किया। मेवाड़ चित्रकारों ने अपने काम में अत्यधिक सूक्ष्मता, एकाग्रता और समर्पण प्रदर्शित किया। लघु चित्रों में अति सूक्ष्म अलंकरण करना चित्रकार की बारीक दृष्टि और शिल्प-कौशल को दर्शाता है।

विशेष उल्लेखनीय यह है कि अलंकरण को मुख्य दृश्य से अलग नहीं किया गया बल्कि यह रचना का अभिन्न हिस्सा रहा। नायिका के वस्त्र पर की गई कढ़ाई, भवनों की जालीदार खिड़कियाँ, हाथियों की साज-सज्जा, अश्वों के मस्तक पर लगे मोरपंख ये सभी तकनीकी सौंदर्य का हिस्सा बनते हैं।

तुलनात्मक दृष्टिकोण

जब मेवाड़ शैली की तुलना अन्य राजस्थानी चित्रशैलियों जैसे किशनगढ़, बूंदी, बीकानेर या मारवाड़ से की जाती है, तो मेवाड़ की एक विशिष्ट विशेषता उभरकर सामने आती है |इसकी संयमित और संतुलित अलंकरण प्रणाली। जहाँ किशनगढ़ शैली में भावात्मक गहराई और मद्धम रंगों का प्रयोग अधिक है, वहीं मेवाड़ शैली की दृढ़ रेखाएं, स्पष्ट आकृतियाँ और जीवन्त रंग संयोजन उसे अद्वितीय बनाते हैं।

बूंदी शैली में जहाँ स्थापत्य और जल-प्रभाव अधिक दिखाई देता है, वहीं मेवाड़ में भूमि के रंग और पारंपरिक संरचनाओं का संतुलन अधिक प्रमुख होता है। अलंकरण इन सभी शैलियों में उपस्थित हैं परंतु मेवाड़ में यह अधिक प्रतीकात्मक और नियंत्रित शैली में अभिव्यक्त होता है।

VII. उपसंहार

मेवाड़ की लघु चित्र परंपरा भारतीय चित्रकला की उन उत्कृष्ट धाराओं में से एक है जिसने शिल्प, सौंदर्यबोध, प्रतीकात्मकता और सांस्कृतिक विविधता को अत्यंत समृद्ध रूप में अभिव्यक्त किया है। प्रस्तुत शोध-पत्र में "मेवाड़ के लघु चित्रों में अलंकरण की परंपरा" का गहन विश्लेषण किया गया जिसमें अलंकरण केवल बाह्य साज-सज्जा नहीं बल्कि एक अर्थगर्भित दृश्य भाषा के रूप में उभरा है एवं जिसमें अलंकरण के विविध पक्षों, सौंदर्य शास्त्र, प्रतीक प्रणाली और शैलीगत विशेषताओं की समेकित विवेचना की गई है।

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 8.206| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

मेवाड़ लघु चित्रों में अलंकरण मात्र सजावटी तत्व नहीं है बल्कि वह एक *विज़ुअल भाषा* के रूप में कार्य करता है जो न केवल सौंदर्य की वृद्धि करता है बल्कि प्रतीकों के माध्यम से भावनाओं, चरित्र की महत्ता, कथा की गूढ़ता और वातावरण की विशिष्टता को भी उजागर करता है। यह भाषा रंगों, रेखाओं, वस्त्रों, आभूषणों, प्राकृतिक दृश्यों और पृष्ठभूमियों के माध्यम से अभिव्यक्त होती है। अलंकरण का सीधा संबंध मेवाड़ की सांस्कृतिक चेतना से है। चित्रों में दिखने वाले अलंकरण राजपरिवार की गरिमा, धार्मिक श्रद्धा, लोक जीवन की सम्पन्नता और भक्ति परंपरा के विविध रूपों को दर्शाते हैं।
इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि *अलंकरण* मेवाड़ के लघु चित्रों में केवल सौंदर्यवर्धन की भूमिका नहीं निभाता बल्कि वह एक *भावनात्मक, प्रतीकात्मक और शैलीगत संवाद* का माध्यम बनता है। वह इतिहास को दृश्य रूप देता है, संस्कृति को रेखांकित करता है और परंपरा को जीवंत बनाता है।

मेवाड़ के चित्रकारों की सूक्ष्म दृष्टि उनकी परंपरा-निष्ठा और सौंदर्यबोध का यह अनुपम उदाहरण आज भी भारतीय कला के शिखर की ओर संकेत करता है।

सन्दर्भ

1. Moti Chandra – *The Art of Rajasthan* पृष्ठ 45–80
2. K. K. Sharma – *Rajasthani Miniature Painting* पृष्ठ संख्या 100–135
4. R. C. Sharma – *Indian Miniature Painting* पृष्ठ संख्या 58–80
5. Dr. Ratan Parimoo – *Studies in Indian Painting* पृष्ठ संख्या 90–125
7. डॉ. सुभाषिनी वर्मा – *राजस्थानी चित्रकला का विकास* पृष्ठ संख्या 60–95
8. डॉ. प्रेमशंकर श्रीवास्तव – *भारतीय लघु चित्रकला* पृष्ठ संख्या 110–140

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

निस्केयर
NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

| Mobile No: +91-6381907438 | Whatsapp: +91-6381907438 | ijmrset@gmail.com |

www.ijmrset.com